Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

Original Article

आंगनवाड़ी कार्यक्रम का गर्भवती एवं नवप्रसूता महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव

श्वेता तिवारी[1], अनीता बाजपेयी[2]

[1]शोधछात्रा, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

[2]शोध-निर्देशक, श्री जय नारायण मिश्रा स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

Email: swtshweta989@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180220
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 2(A)
Pp. 108-110
February - 2026
Submitted: 16 Jan. 2026
Revised: 26 Jan. 2026
Accepted: 11 Feb. 2026
Published: 28 Feb. 2026

शोध सार

वर्तमान के आधुनिक युग में भी ग्रामीण गर्भवती महिलायें आंगनबाड़ी पर ही निर्भर है क्योंकि अधिकतर ग्रामीण परिवारों का मानना है कि जब आंगनबाड़ी के द्वारा उन्हे आधारभूत सेवाये मिल ही जा रही है तो उन्हे गांव से बाहर जाने कि आवश्यकता ही क्या है। प्रस्तुत शोधपत्र में यह जानने का प्रयास किया गया है कि ग्रामीण गर्भवती एवं नवप्रसूता महिलाओं के स्वास्थ्य एवं दैनिक जीवन पर किस प्रकार के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़ते है इस शोध पत्र में मैंने अयोध्या के पुरैन ग्राम का अध्ययन किया है। इस शोध पत्र में शोधार्थिनी द्वारा प्राथमिक आंकड़ों के साथ–साथ द्वितीयक आंकड़ों का भी प्रयोग किया गया है।

शब्द कुंजी *– आंगनबाड़ी, महिला स्वास्थ्य, पोषण, आई.सी.डी.एस. ।*

प्रस्तावना

जैसा कि हम जानते है आंगनबाड़ी कार्यक्रम भारत में एक प्रकार का ग्रामीण बाल देखभाल केन्द्र है, जिसे सन् 1975 में भारत सरकार द्वारा एकीकृत बाल विकास सेवा कार्यक्रम के अंग के रूप में शुरु किया गया, जो कि एक उच्च श्रेणी की एवं अपने कर्तव्य के प्रति समर्पित संस्था है। जो समाज को बेहतर बनाने में अपना पूर्ण योगदान प्रदान कर रही है। आंगनबाड़ी केन्द्रों के द्वारा सभी गर्भवती स्त्रियों को स्वास्थ्य वर्धक सुविधायें मुहैया करवायी जाती है।

आई.सी.डी.एस. का संगठनात्मक ढांचा

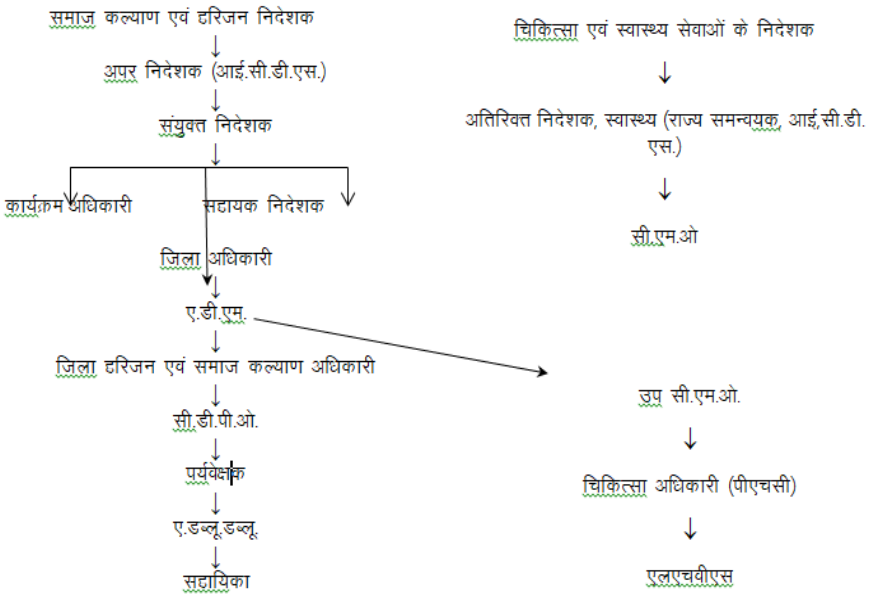

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
श्वेता तिवारी, शोधछात्रा, समाजशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

How to cite this article:
तिवारी, . श्वेता ., & बाजपेयी, . अनीता . (2026). आंगनवाड़ी कार्यक्रम का गर्भवती एवं नवप्रसूता महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रभाव. Journal of Research & Development, 18(2(A)), 108–110.
https://doi.org/10.5281/zenodo.18933855

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18933855
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

आई.सी.डी.एस. कार्यक्रम के ये सभी अधिकारी विभिन्न चरणों पर बंटे होने के बावजूद भी एक कड़ी में बंधे रहकर अपने स्तरो पर उचित कार्यान्वयन के लिए एक–दूसरे के साथ समन्यवित होकर कार्य करते है ये मुख्य रूप से 0–6 वर्ष की आयु के बच्चों में कुपोषण की समस्या को रोकने, विभिन्न जीवन– क्षणित करने वाली बीमारियों के लिए उनके टीकाकरण और उनकी रोकथाम, गैर–औपचारिक शिक्षा, पूरक के लिए कार्य करते है तथा गर्भवती और नई माताओं को पोषण, उचित स्वास्थ्य देखभाल सेवाएँ प्रदान करते है। जैसे कि हर सिक्के के दो पक्ष होते है उसी प्रकार से सरकार द्वारा कार्यान्वित की गयी योजनाओं के भी दो पक्ष होते है सकारात्मक एवं नकारात्मक। हमें किसी भी योजना के प्रभाव को समझने के लिए दोनो पक्षों के बारे में जानकारी होना आवश्यक है।

सकारात्मक पहलू :– आंगनबाड़ी कार्यक्रम महिलाओं एवं बच्चों के लिए एक सौगात बनकर उभरा खासकर ग्रामीण स्थानों पर क्योंकि ग्रामीण इलाके शिक्षा एवं स्वास्थ्य के मामले में बहुत पिछड़ा हुआ था।

- गांवों में, आंगनबाड़ी केन्द्रों के खुलने से ग्रामीण महिलाये अपने स्वास्थ्य के प्रति सतर्क हुई है पहले वे अपने स्वास्थ्य के प्रति पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए उतना ध्यान नही देती थी परन्तु अब जब वे आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के संबंध में होती तो आंगनबाड़ी कार्यकर्ता उनको स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करती है।
- परिवार नियोजन के प्रति महिलाओं में जागरुकता आई है क्योंकि केन्द्र की कार्यकर्ता हर महिला को परिवार नियोजन का महत्व बताते हुए उनके प्रकार जैसे (निरोध, माला–डी, गर्भनिरोधक इंजेक्शन) आदि मुफ्त में उपलब्ध करवाती है।
- बच्चों के पालन–पोषण ओर तौर–तरीको में बदलाव आया है। गर्भवस्था में खुद का ख्याल कैसे रखना है इस बारे में अब महिलायें पहले से ज्यादा ध्यान देती है क्योंकि अधिकतर गांवो में लड़कियों की शादी अट्ठारह वर्ष तक कर दी जाती है इस वजह से जो उनकी प्रथम गर्भकाल होती है वो बहुत छोटी उम्र में होता है जिसके कारण वे अपनी ससुराल पक्ष से सारी चीजे नही बता पाती है परन्तु जब उनका पंजीकरण आंगनबाड़ी केन्द्र पर किया जाता है तो वहा उन्हे महतवपूर्ण टीके, दवाईयाँ एवं जानकारी मुहैया करवाई जाती है।
- आंगनबाड़ी केन्द्रो के द्वारा समय–समय पर टीकाकरण कैम्प लगाया जाता जिसके कारण गर्भवती स्त्री को कही दूर नही जाना पड़ता।

नकारात्मक पहलू: जहाँ एक तरफ आंगनबाड़ी कार्यक्रम की अच्छाइयां है वही एक तरफ इस कार्यक्रम के कुछ कु–प्रभाव भी है –

- कई बार कार्यकर्ता अपने दायित्वों का निर्वाहन सही ढंग से नही करती जिसका सीधा प्रभाव लाभार्थियों पर होता है।
- **मानस शशि (2012)** के अध्ययन के अनुसार आई.सी.डी.एस. में बच्चों के लिए स्वास्थ्य और पोषण सेवाओं की ज्ञान के संबंध में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओ के बीच जागरुकता का अध्ययन किया और पाया कि 92.5 प्रतिशत आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण प्रदान किये जाने बावजूद, केवल 55 प्रतिशत ही वास्तव में पोषण सेवाओं के बारे में जानते है, इसके अलावा, 30 प्रतिशत आंगनबाड़ी कार्यकर्ता जो बच्चों की पोषण स्थिति का आंकलन कर रहे थे, उन्हें आंकलन के लिए लागू तरीको की जानकारी नही थी।
- गर्भनिरोधक दवाओं के बारे में अधुरी जानकारी प्राप्त हो पाना भी दुखदायी स्थिति है क्योंकि जो आंगनबाड़ी सेविका (कार्यकर्ता) होती है वो अधिकतर उसी ग्राम की निवासी होती है जहां उनका आंगनबाड़ी केन्द्र होता है। इसी कारण वो वहा की लाभार्थी महिला से किसी न किसी रिश्ते से जुड़ी होती है जिसके कारण उनक`बीच में खुल कर वार्तालाप नही हो पाती।

  कई बार केन्द्र पर गर्भ निरोधक गोलिया न मिल पाना भी असंतुलन का कारण बनती है क्योंकि लाभार्थी ने पहले मिलने पर उसका प्रयोग शुरु किया परन्तु जब खत्म होने पर दुबारा नही मिलता तो इस वजह से उसका पूरा कोर्स अधूरा ही रह जाता है। जिससे महिला के स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

चुनौतियां एवं सुझाव

किसी कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण भाग वे लाभार्थी होते है जिनके लिए इसे लागू किया गया है इसके सफलता के लिए मुख्य भूमिका जागरुकता और उसे समझने के लिए उचित शिक्षा के स्तर के माध्यम से समुदाय की होती है, जब महिलाओं के स्वासयि की बात की जाती है, तो सबसे पहले महिलाओं को स्वयं के बारे में जागरुक होना होगा और अपनी स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान करने के लिए इसे अच्छी तरह से समझना होगा/कार्यकर्ताओं को ध्यान रखने की जरूरत है हर उस व्यक्ति को लाभ मिले जिसे इसकी जागरुकता है और कार्यों का निर्वहन समयानुसार चलते रहें।

निष्कर्ष

जैसे की हमने सुना है **गांधी जी** के द्वारा दिया गया एक कथन है कि – **"जब हम एक पुरुष को शिक्षित करते तब हम बस एक व्यक्ति को शिक्षित करते परन्तु जब हम एक स्त्री को शिक्षित करते है तो हम एक सभ्यता को शिक्षित करते है "** भारत जैसे विकासशील देश में विशेष रूप से महिलाओं के बीच बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं का उपयोग काफी खराब है, जो उन्नत स्वास्थ्य सेवा में सार्वजनिक निजी भागीदारी व्यय में वृद्धि के कारण है, अध्ययनो से यह निष्कर्ष निकलता है कि यद्वपि आई.सी. डी.एस. की मुख्य संरचना कुपोषण के बहुआयामी निर्धारको पर केंद्रित है, परन्तु फिर भी परिवारों में बाल देखभाल व्यवहार में सुधार और माता–पिता को इसे अच्छी तरह से समझने के लिए शिक्षित करने पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है। एक अन्य कारक है कि आई.सी.डी.एस. कुपोषण को कम करने तथा महिलाओं और बच्चों को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के इसके उद्देश्यों के बीच की खाई को पाटने की तत्काल आवश्यकता है। क्योंकि आई.सी.डी.एस. को कुपोषण के बहु आयामी कारणों से दूर करने के लिए डिजाइन किया गया है, इसलिए इसे अपने कार्यों के दायरो को बढ़ाते हुए अन्य पहलुओं पर भी ध्यान देना

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-2(A)| February - 2026

चाहिए। अर्थात् आंगनबाड़ी कार्यक्रम के द्वारा कई योजनायें चलायी गयी जो अत्यन्त प्रभावशाली रही है, इन्हे निरन्तरता प्रदान की जाने की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ए. रिपोर्ट ऑन इवॉल्योशन ऑफ आई.सी.डी.एस प्रोगाम एक्रास स्टेट : इंडियास इंटिग्रेटेड चाइल्ड डेवलपमेन्ट सर्वित न्यूट्रिसन्स प्रोग्राम : हू इस इट रीच एण्ड व्हाट इफैक्ट डस इट हैव?
2. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया (2010), आईसीडीएस इवॉल्योशन रिपोर्ट, डिपार्टमेन्ट ऑफ वोमेन एण्ड चाइल्ड डेवलेपमेन्ट, मिनिस्ट्री ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलेपमेन्ट, नई दिल्ली
3. गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, सेन्सेस 2011,
4. https://www.census.gov/population/international/Files/wid-9803.pdf
5. मिनिस्ट्री ऑफ वोमेन एण्ड चाइल्ड डेवलेपमेन्ट।